जीवोदय सोसाइटी, नेहरूगंज, इटारसी, जिला–होशंगाबाद, मध्यप्रदेश–461111, संपर्क–(07572)236191

# हलचल

अंक–10
मई–जून

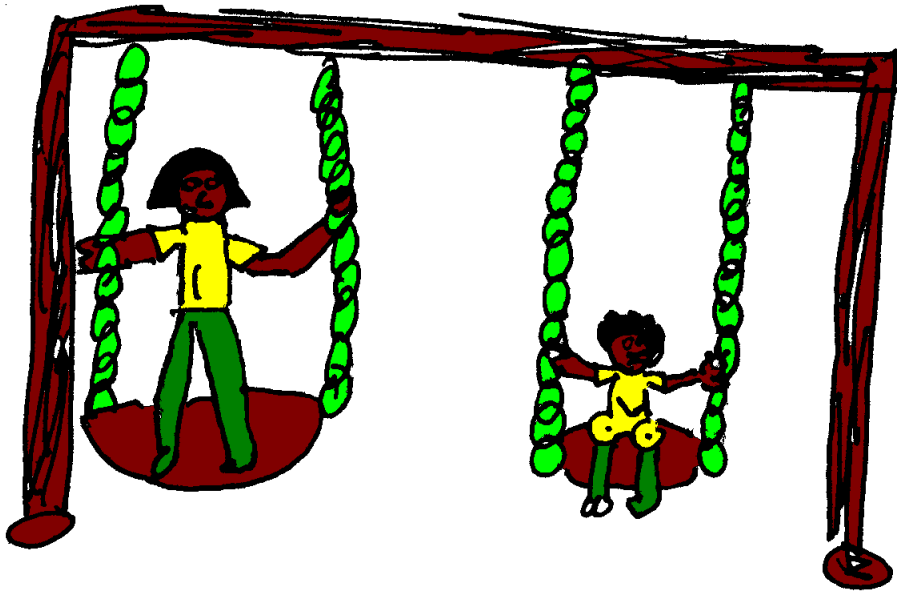

# हमारे काम के बारे में.....

रेल्वे प्लेटफार्म पर अक्सर यह देखने में आता है कि एक बच्चा गंदे कपड़े पहने हुए पटरियों के बीच से कुछ बीन रहा है। लेकिन इस दृश्य से आगे बहुत ही कम लोग उसे देख पाते हैं। आइए हमारी आंखों से आप भी इसके आगे जानिए–

थोड़ी देर में बच्चा ऊपर प्लेटफार्म पर आता है और अपने दोस्त से एक छोटी सी बोतल मांगता है। वह उस बोतल को अपने पास रखे एक गंदे से कपड़े में उड़ेलता है और उसे सूंघने लगता है। सूंघते–सूंघते वह वापस अपने काम में लग जाता है।

बोतल में क्या था? उसने ऐंसा क्यों किया? ऐंसे कई सवाल हैं जिनके उत्तर बोलने में आसान भी हों और अधिकांश उस बालक पर आरोप की तरह भी हों लेकिन जरा आगे हमारी जानकारी क्या कहती है उस पर बिचार करें फिर पुनः इस तरह के प्रश्नों के उत्तर ढूंढें।

वह बालक पहले जब प्लेटफार्म पर नया–नया आया था तब उसके पास पैसे नहीं हुआ करते थे। वह प्लेटफार्म के बच्चों जैसे काम भी नहीं करता था क्योंकि उसे ऐसा करने में झिझक होती थी। लेकिन भूख तो रोज लगती ही थी, वह कब रूकने वाली। उसे भी भूख लगती थी तो पुराने बच्चे उसे खाना दे देते थे। लेकिन साथ ही उसने उन बच्चों को देखकर ये भी सीखा कि जब कभी ऐंसी स्थिति आ जाए कि खाना न मिल पाए तो व्हाइटनर को कपड़े में डालकर सूंघने से भूख मर जाती है। धीरे–धीरे अब व्हाइटनर का नशा करना उसकी आदत बन जाती है और उसे अब व्हाइटनर का नशा करना अच्छा भी लगता है।

यह तो इस तरह के बच्चों के जीवर का सिर्फ एक पहलू है जिसे हमने बहुत ही सरल करके आपके सामने प्रस्तुत किया। प्लेटफार्म पर रहने के खतरों के बारे में तो अभी बात की ही नहीं। ये हम आप पर छोड़ते हैं कि आप खुद पता करें।

जीवोदय सोसाइटी इन्हीं बच्चों के बीच इटारसी प्लेटफार्म पर कार्य कर रही है। प्लेटफार्म पर छोटे,–बड़े, नए–पुराने, गुमशुदा अथवा किसी कारण से घर छोडकर आए लड़के–लड़की मिलते हैं।

अपने सुनहरे भविष्य का सपना तो पता नहीं ये बच्चे या इनके मां–बाप देख पाते होंगे या नहीं लेकिन जीवोदय जरूर देखता है और चौबीसों घंटे अपनी तीनों परियोजनाओं (Projects) के जरिए इन सपनों को साकार करने में लगा रहता है।

# इस अंक में.....

हलचल
अंक–10
मई–जून


| विषय सूची | लेखक/रचनाकार | पृ.क्र. |
|---|---|---|
| आप के नाम चिट्ठी | संपादकीय | 02–02 |
| आपका पन्ना | संपादकीय | 03–03 |
| बदला बदला सा संसार (आपबीती) | सुश्री नाज खान | 04–06 |
| टिल्लू की कचौड़ी (कहानी) | विशाल विश्वकर्मा | 07–09 |
| हम नहीं किसी से कम (फुलझड़ी) | संकलित | 10–11 |
| पेड़ का डर (गप्प) | यूनुस | 12–14 |
| जामुन काली–काली (तुकबंदी) | संतोष | 15–15 |
| गुणा करने का जादू (करके सीखो) | विक्रम चौरे | 16–17 |
| आप कितने जागरूक | संकलन | 18–19 |
| एक नजर इधर भी | संकलन | 20–20 |


संपादन एवं डिजाइन : विक्रम चौरे,
☎7566213945, ✉vikramchourey@gmail.com
चित्रांकन : अजय विश्वकर्मा
प्रूफ रीडिंग : राहुल बड़ोनिया
बितरक : लिपिन पीटर
प्रकाशक : सि.क्लारा,
☎9425040188, ✉jeevodaya1999@rediffmail.com
जीवोदय सोसाइटी, नेहरूगंज, इटारसी, पिन–461111.
मुद्रक : अनिल स्क्रीन प्रिंटर्स, इटारसी, ☎9425044752

मूल्य : 20रू.मात्र

वार्षिक सदस्यता : 100रू., अजीवन सदस्यता : 3000रू.

# आपके नाम चिट्ठी

प्रिय मित्रों

आपको मेरा प्यार भरा नमस्कार

स्कूल खुलने वाले हैं। इस साल 'शिक्षा का अधिकार' की बातें खूब जोरों से चल रहीं हैं। स्कूलों में एडमीशन यहां एक घटना सामने आई। कक्षा 9बी की एक छात्रा को फीस के अभाव में सरकारी स्कूल में एडमीशन नहीं मिल पा रहा था जबकि परिवार बी.पी.एल. कार्डधारी है। अगले साल छोटी बहन भी कक्षा 9वीं में पहुंचने वाली है फिर तो मानो परिवार पर आफत ही आ पड़ेगी।

इस संबंध में हम स्कूल जाकर प्रिंसिपल से मिले। वहां पता चला कि 9वीं में एडमीशन के लिए चार माह के 405 रूपये जमा करने है जिसमें से 150 रू. शाला विकास के हैं। प्रिंसिपल ने कहा कि शाला विकास शुल्क हम नहीं लेंगे लेकिन शेष शुल्क सरकारी है जो जमा करना अनिवार्य है। हमने पूछा कि क्या कोई ऐंसा प्रावधान नहीं है कि पालक शुल्क देने में असमर्थ हो तो शुल्क माफ की जा सके। उन्होंने कहा कि ऐंसा कोई प्रावधान नहीं है लेकिन वे खुद उनकी ओर से बालिका की शुल्क भरने को तैयार हैं।

जहां एक ओर सरकार लड़कियों के पढ़ाई छोड़ देने के कारण अपनी चिंता दिखाती है, वहीं दूसरी ओर सरकार का खुद ही उनकी पढ़ाई छोड़ने का कारण बन जाना सचमुच हास्यास्पद लगता है। इस बात से स्पष्ट मालूम पडता है कि सरकार की चिंता एक दिखावा है। यदि कोई परिवार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा है यानि प्रतिमाह परिवार की आमदनी लगभग 1500रू. होगी। यदि इसमें से 400 रू. की बच्चों की फीस भरना पड़ेगा तो परिवार के चार सदस्य महीने भर क्या खाऐंगे। इसका अर्थ हुआ कि वर्तमान व्यवस्था में गरीबी रेखा के परिवारों के बच्चों को कक्षा 9वीं कक्षा से ज्यादा पढ़ने का अधिकार नहीं है। यह इसलिए क्योंकि भोजन करना तो परिवार छोड़ नहीं सकता इसलिए बच्चों की पढ़ाई छुड़वा देना ही बेहतर है। और इस तरह शिक्षा के अभाव में वह परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी गरीबी का जीवन ही ब्यतीत करने को बाध्य होगा।

मेरे बिचार में यहां शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत कोई भारी फेरबदल करने की जरूरत नहीं है बल्कि एक तो यह हो सकता है कि ऐंसे बच्चे जिनका परिवार गरीबी रेखा से नीचे आता हो उन बच्चों की सरकारी स्कूल में किसी भी तरह की शुल्क न ली जाए अथवा इस शुल्क की ब्यवस्था शाला विकास के पैसों से अथवा अन्य कोई फंड द्वारा की जानी चाहिए। अंत में यदि 'हलचल' पर आपकी कोई प्रतिक्रिया हो तो अवश्य लिखिएगा।

'धन्यवाद'

# आपका पन्ना

■ हलचल के पिछले अंक में आदिवासी वाली कहानी बहुत अच्छी लगी। दुलारी दीदी के साथ जो घटना घटी है वेसे ही हर बार किसी घटना को जरूर छपना चाहिए।

(पूजा, सरिता)

■ पिछले अंक में बहुत सारी गलतियां हैं। 'श' अक्षर की जगह 'थ' लिख गया है जिससे हमारे नाम भी गलत छप गए हैं।

(शान्तो, शिवानी, आशा)

■ चित्र रंग बिरंगे होंगे तो बहुत अच्छा लगेगा। हलचल थोड़ी मोटी भी होनी चाहिए क्योंकि इतने कम बच्चों की ही चीजें छप पाती हैं।

(माया, यूनुस, इरशाद, कलावती)

■ पिछली पत्रिका में जो महिला की कहानी 'आपबीती' में छपी है कि वह किस तरह प्लेटफार्म की जिंदगी छोड़कर अच्छे से रहने लगी । वह सबसे अच्छी लगी। ऐसी कहानी रहना चाहिए।

(कैलाश, उम्र 18 वर्ष)

■ इस बार की हलचल काफी अच्छी है, इसमें कहानियां काफी अच्छी हैं। लेकिन बच्चों के लिए कुछ ऐंसा नहीं हैं कि वे उसपर चर्चा कर सकें।

(मुनीर खान, कक्षा 12 वीं)

■ बच्चों को लेखन की ओर प्रेरित करने से बस्तु को गहराई से समझने और अंतिम बिन्दु तक सोचने की क्षमता बढ़ती है, जिसके दूरगामी अच्छे परिणाम सामने आते हैं। पूरी हलचल में मौलिकता का ध्यान रखा गया है। निश्चित ही आप अपने प्रयास में सफल माने जाएंगे। दरअसल हमारी मूल समस्या प्लेटफार्म व्हाइटनर, शिक्षा न होकर बिना सोचे समझे की जा रही जनसंख्या वृद्धि है। नाज मैडम एक घर संवारती हैं तब तक 10 बिगड़ चुके होते हैं। इस समस्या के बारे में भी हलचल में समय–समय पर प्रकाशन किया जाना चाहिए।

(श्री अजय गंगराड़े, नेहरूगंज, इटारसी)

नोट–पिछले 9वे अंक में सभी जगहों पर अक्षर 'श' के स्थान पर 'थ' छपने से पाठकों को हुई परेशानी के लिए हमें खेद है। हमारी कोशिश रहेगी की आगे से इस तरह की गलतियां न हों।

# बदला बदला सा संसार –आपबीती

मैं किरण (परिवर्तित नाम) इटारसी के मछली बाजार में अपने परिवार के साथ रहती थी। परिवार में पापा–मम्मी के अलावा मेरी दो बहनें थी। मेरा कोई भाई नहीं था। पापा नशा करते थे। हम दो बहनें पुत्री शाला में पढ़ते थे। छोटी बहन मां के साथ रहती थी। पिता मछली बेंचने के बाद कभी–कभी नशा करके घर आते थे और मां के साथ झगड़ा करते थे। धीरे–धीरे पापा की नशे की लत बढ़ती गई। जैसे–जैसे पापा की नशे की लत बढ़ती गई वैसे–वैसे घर की हालत भी बिगड़ती गई। धीरे–धीरे घर में खाने की तंगी होने लगी। अब पापा का रोज का काम था घर में नशा करके आना और झगड़ा करना। मां और हम बहुत परेशान थे। अक्सर पापा नशे की हालत में झगड़ा करके हम सबको घर से बाहर निकाल देते तो हमें रात घर के बाहर ही गुजारनी पड़ती। अब हमारा स्कूल जाना भी कम हो चला था।

एक दिन मेरी दोस्ती एक लड़की से हुई। उसका नाम ज़रीना (परिवर्तित नाम) था। वह रेल्वे प्लेटफार्म पर जाकर गुटका बेंचती थी। हम दोनों बहने भी एक बार उसके साथ प्लेटफार्म पर घूमने के लिए गए। जब लौटकर आए तो हमें पता चला कि पापा ने मां को बहुत मारा और घर से भगा दिया।

उस रात हम और मां रेल्वे स्टेशन के मुसाफिर खाने में जाकर सोए। उसके बाद से हम मुसाफिर खाने में ही सोने लगे। कुछ दिनों के बाद पापा ने मां को छोड़ दिया। यहां मुसाफिर खाने में रहने के साथ–साथ हमने अब ज़रीना जैसे ही प्लेटफार्म पर जाकर गुटखा बेंचना शुरू कर दिया था। हम दोनों बहनें गुटखा बेंचकर मां को पूरे पैसे देती थीं। फिर हम लोग पास की ही होटल पर खाना खा लेते और मुसाफिर खाने में सो जाते।

मुसाफिर खाने में रहने के कारण मेरी मां को भी नशा करने की आदत लगने लगी थी और धीरे–धीरे बढ़ते जा रही थी। मुझे अब मेरी छोटी बहन मीरा (परिवर्तित नाम) की चिंता होने लगी थी जो मां के पास ही रहती थी। एक दिन मुझे जीवोदय संस्था के बारे में पता चला तो मैं मीरा को वहां ले गई। वहां मुझे नाज मैड़म मिली। उन्होंने कहा कि तुम्हारी छोटी बहन को तुम हॉस्टल में ड़ाल दो। इसके लिए मैने उन्हें अपनी मां से बात करने को कहा। मेरी मां मीरा को हॉस्टल में डालने के लिए तैयार नहीं हुई। कुछ दिनों बाद मेरे और मैड़म के बार–बार समझाने पर वह इसके लिए तैयार हो गई। मीरा अब भोपाल में नित्सेवा में रहकर पढ़ती है।

नाज मैड़म से मै सिर्फ अपनी छोटी बहन के लिए मिली थी लेकिन उनके संपर्क में आने के बाद हमारी जिंदगी सुधार होने लगा। प्लेटफार्म पर गुटका बेंचकर हमारी कमाई तो हो रही थी लेकिन हमारी बढ़ती उम्र के कारण कई अन्य तरह की परेशानियां भी शुरू होने लगी थी। वहां किसी तरह की कोई सुरक्षा नहीं थी। मैंडम ने वहां होने वाले इस तरह के खतरों के बारे में समझाया और हमें मुसाफिर खाना छोड़कर किराए का कमरा लेकर रहने को कहा। हमे बात समझ में आ गई थी। हमने नाला मुहल्ला में एक किराए का कमरा ले लिए और हम तीनों वहां रहने लगे। कुछ दिनों बाद मैने शादी कर ली फिर मेरी छोटी बहन की भी शादी हो गई। मां मेरे ही साथ रहती है। मेरे पति ट्रेन में चाबी की रिंग और गले की चेन बेंचते हैं। मैं सिलाई सीख रही

हूं और गुटका बेंचने अब नहीं जाती। नाज मैडम ने मेरा खाता बैंक में खोलने को कहा लेकिन जरूरी कागज नहीं होने से बैंक में खाता नहीं खुल पाया। मैड़म ने फिर मुझे फेमिली मीटिंग में आने को कहा जो प्लेटफार्म पर रहने बाले परिवारों के लिए रखी जाती है। इस मीटिंग में मुझे राशन कार्ड, वोटर आई.डी. के बारे में पता चला। मैं भी ये कार्ड बनवाना चाहती थी। नाज मैड़म ने मेरी कार्ड बनाने में बहुत मदद की अब मेरे पास राशन कार्ड है। मैने कभी नहीं सोचा था कि मेरा कभी कोई सरकारी कागज भी बनेगा। मुझे राशन कार्ड बनने पर बहुत खुशी हुई। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि अब हम लोग प्लेटफार्म पर रहने वाले नहीं हैं। थोड़े दिनों में मैं अपना बैंक में खाता भी खुलवाऊंगी। इसके लिए मैं तैयारी कर रही हूँ। मेरी एक छोटी सी लड़की है। मैं उसे खूब पढ़ाना चाहती हूँ।

(किरण बहुत ही एक्टिव है। अब वह सरकारी योजनाओं और कागजों को लेकर काफी जागरूक हो गई है। उसके राशन कार्ड बनने से और भी प्लेटफार्म परिवारों ने स्टेशन छोड़कर किराए के कमरों में रहने की इच्छा जाहिर की है। अब तक 14 परिवारों ने इस साल राशन कार्ड बनवाए हैं। अब वे लोग अपनी पहचान बनाने को लेकर काफी जागरूक हैं। क्योंकि जब तक इनके पास पहचान नहीं होगी तब तक न तो इनका बैंक अकाउंट खुलेगा और न ही वे सरकारी योजनाओं का फायदा ले सकेंगे। –नाज खान, जीवोदय सोसाइटी, इटारसी)

## टिल्लू की कचौड़ी –कहानी

टिल्लू भैया थे बड़े जुगाडू। लेकिन अपनी आदत से बड़े मजबूर थे। एक बार की बात है। उनके स्कूल में मैड़म जी ने कह दिया था कि मैं सोमवार को सभी के बाल देखूंगी। किसी के हीरो जैसे बाल मिले तो बहुत पिटाई होगी। टिल्लू भैया को अपने बालों से बहुत प्यार था। पर अब मैडम जी की मार के आगे भला किसकी चलती। भैया ने पिताजी से बाल कटाने के पैसे मांगे। पिताजी ने हिदायत दी कि देखो जिस काम के लिये पैसे ले रहे हो उसी में खर्च करना। और हॉ बाल छोटे–छोटे करवा लेना। टिल्लू भैया ने एक आज्ञाकारी बालक की तरह पिताजी की बातें ध्यान से सुनी और चल दिए बाल कटवाने। रास्ते में एक कचौरी की दुकान पडती थी। वहां पहुंचते ही टिल्लू भैया की नाक ने जबाव दे दिया। अब तो रहा नही जा रहा था। सो चल दिए जहां नाक ले गई और दो कचौरी खा गए। पर यह तो बहुत बुरा हुआ। उतने पैसों में सिर्फ दो ही कचौरी आ पाई जो दाढ़ में ही चिपक गई। मन तो भरा ही नहीं था। बड़ी मजबूरी थी इसलिए लौटना पड़ा। मन तो ऐंसा कर रहा था कि खूब सारी कचौरी खा लेते। पैसों के अभाव में कचौरी का भूत उतरने लगा तो मैड़म जी की याद आने लगी। सोचा पिताजी से बोल दूंगा कि पैसे गिर गए। लेकिन यदि पिताजी ने पीटा तो फिर। अंत में टिल्लू भैया ने वही किया जिसके लिए वे प्रसिद्ध थे। रास्ते में उन्हें एक आम का बगीचा दिखा। बस फिर क्या था , बगीचे से आम चुराने का तो उनका कई बार का अनुभव था। सो आज काम आ गया। उन्होंने अपनी शर्ट निकाली और आम तोड़कर उसमें बांधने लगे। काफी पके आम तोड़ने के बाद अचानक माली आता देख उन्होंने वहां से खिसक लेना ही उचित समझा। फिर वे उन्हें बाजार बेंचने चल पड़े। उनकी किस्मत इतनी अच्छी थी कि रस्ते में ही एक अंकल से उन्होंने आम खरीदने का कहा तो उन्होंने खरीद लिए। इस तरह टिल्लू भैया के पास एक बार फिर पैसे आ गए। वे फिर निकल पड़े बाल

कटवाने पर रस्ता तो एक ही था जिसपर वह कचौरी की दुकान पड़ती थी। एक बार फिर उन्हें अपनी नाक के हाथों मजबूर होना पड़ा। लेकिन इस बार सोच रहे थे कि वे फिर से आम तोड़कर बेंच देंगे। पर हर बार किस्मत साथ थोड़ ही देती है। इस बार तो माली डंडा लेकर घूमता ही रहा। कहीं भी नहीं गया। माली के हटने की राह देखते–देखते शाम हो गई थी। बेचारे टिल्लू भैया को भूत का डर सताने लगा था। किसी तरह हिम्मत करके वे घर पहुंच गए। पिताजी ने जब टिल्लू को देखा तो बुलाकर खूब डांट लगाई। टिल्लू ने पूरी कहानी पिताजी को सुनाई और कहा कि अब से कभी वे ऐंसी हरकत नहीं करेंगे। अभी तो इंटरबल ही था कहानी तो अभी बाकी थी। अगले दिन टिल्लू भैया बिना बाल कटाए स्कूल पहुंच गए तो मैड़म जी ने भी खिंचाई कर दी। टिल्लू भैया गिड़गिड़ाते रहे पर मैड़म जी ने उनकी एक न सुनी। फिर क्या था,

स्कूल में ही उन सभी बच्चों के बाल काटे जाने थे जिनके बाल अभी भी बड़े थे। आज स्कूल में एक नाई को इस हेतु बुलाया गया था। टिल्लू भैया बाल कटवाते समय बहुत रोए क्योंकि उन्हें पता था कि स्कूल में नाई बाल काटेगा तो बहुत ही छोटे–छोटे हो जाऐंगे। फिर बच्चे दो–तीन महिने तक टकलू–टकलू कहकर परेशान करते रहेंगे जैसा कि टिल्लू भैया पिछले साल मटरू को चिड़ाते थे। खैर उन्हें कचौरी खाना बहुत महंगी पड़ी। लेकिन इस बार उन्होंने कसम खाई कि बे लालच नहीं करेंगे और अपने पापा–मम्मी से बगैर पूछे कुछ नहीं करेंगे। उम्मीद है कि कसम खाना उन्हें महंगा नहीं पड़ेगा।

कहानी–विशाल विश्वकर्मा, कक्षा नौवीं, चित्र–अजय विश्वकर्मा, कक्षा दसवीं।

(इस बार यह कहानी किसी फार्मल एक्टिविटी से निकलकर नहीं बल्कि एक घटना से निकलकर आई। जिस बालक ने कहानी बनाई है उसने उस घटना को लेकर उसे मजेदार बनाने की भरपूर कोशिश की इसके लिए उसने हमारी मदद भी ली।)

# हम नहीं किसी से कम
## –फुलझड़ी

पिछले मई माह में जीवोदय के बच्चे चित्रकूट घूमने गए। कुछ बच्चे ओपन स्टेट लेबल साफ्ट बॉल प्रतियोगिता में हिस्सा लेने इंदौर गए। स्कूल के रिजल्ट भी आए और कुछ बच्चों ने बहुत ही अच्छे नंबर लाए। इन सभी बच्चों से बात करने पर उन्होंने कुछ इस तरह से अपने बिचार व्यक्त किए–

चित्रकूट जाते समय रेलगाड़ी में मेरी दोस्ती एक आंटी से हो गई। फिर मैने उन्हें और उनके बच्चों को मेंहदी लगाई। चित्रकूट पहुंचने के बाद हमने भगवान राम की कई प्रकार की मूर्तियां और अलग–अलग तरह की रामायणें भी देखीं।

मनीषा, कक्षा आठवीं

हम चित्रकूट में जानकी घाट गए तो एक बंदर ने मुझे पकड लिया फिर मैने उसे चने दिया तो उसने मुझे छोड़ दिया।

पूजा ठाकुर, कक्षा आठवीं

चित्रकूट में हम गुप्त गोदावरी गए। वहां गुफा में पानी ही पानी था। एक पल मुझे लगा कि मैं नही जा सकूंगी। पर अंदर जाने के बाद बाहर आने की इच्छा नहीं हुई।

मोहिनी, कक्षा नौवी

हमको अच्छा लगा कि हमने एक नई जगह देखी जिसके बारे में सिर्फ सुना था। चित्रकूट की प्राकृतिक संदरता को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई।

शोभा, कक्षा पांचवी

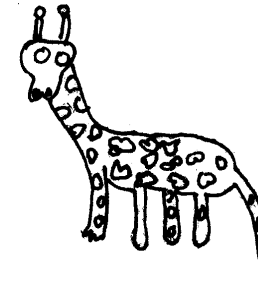

मैं पहली बार बाहर खेलने के लिए गई थी। मुझे बहुत अच्छा लगा। वहां भोपाल, इंदौर, आष्टा, ग्वालियर, और टीकमगढ़ के बच्चे भी सॉफ्टबाल खेलने के लिए आए थे।

शोभा, कक्षा पांचबी

नाश्ता करने के बाद हम साफ्टबाल खेलने के लिए चिमन बाग गए। वहां पहले भैया लोगों का मैच हुआ। भैया लोग ग्वालियर से थे। उनकी टीम मैच हार गई।

मनीषा, कक्षा–सातवी

हम सब लोगों ने बहुत मेहनत की थी फिर भी हम चार में से दो मैच हार गए इसलिए अच्छा नहीं लगा। पर अबकी बार जाऐंगे तो जीत के आऐंगे।

पूजा श्रीवास्तव, कक्षा–नौवी

मुझे कक्षा चौथी में 90.75 प्रतिशत अंक मिले हैं। हिन्दी और पर्यावरण विषय मुझे जल्दी समझ आ जाते हैं इस बजह से मुझे पसंद है। मैं इनसे बोर नहीं होती। मुझे पेंटिंग करना और ब्यूटी पार्लर का काम अच्छा लगता है।

शोभा, कक्षा पांचबी

स्कूल में कुशवाह मैडम अंग्रेजी बहुत अच्छे से पढ़ाती है। इसलिए मुझे अंग्रेजी विषय अच्छा लगता है। मुझे डांस करना पसंद है। इस बार 3री कक्षा में मेरे 87 प्रतिशत बने हैं। मैं बड़े होकर टीचर बनना चाहती हूँ।

शिवानी,, कक्षा चौथी

इस साल मैंने कक्षा दसवीं में 81 प्रतिशत बनाए हैं। आगे मैं विज्ञान–गणित विषय से पढ़ाई करना चाहता हूं। इस उपलब्धि के लिए जीवोदय संस्था का बहुत आभारी हूँ कि जिसमें रहकर मुझे इस हेतु पूरी सुविधाएँ प्राप्त हुई। मैंने ज्यादातर पढ़ाई स्वयं ही की है जिस कारण से मुझे अच्छे अंक मिल पाए।

मनीष, कक्षा ग्यारहवी

सभी चित्र– शोभा, कक्षा– पांचवी

# पेड़ का डर
—गप्प

एक लड़का था। उसका दुनिया में कोई भी नहीं था। लोगों से मांग–मांग कर अपना पेट भरता था और जहां जगह मिल जाती सो जाता था। उसके छोटे कद के कारण सब उसे छोटू–छोटू कहकर बुलाते थे। एक बार वह ये सोचकर दुखी था कि उसका कोई नहीं है। दुखी होकर वह जंगल की ओर चल दिया। जंगल में बड़े–बड़े पेड़ और पत्थर थे। चारों ओर शांति थी। उसे यह देखकर अच्छा लग रहा था अतः उसने अब से जंगल में ही रहने का निश्चय कर लिया। जंगल में एक आम का पेड़ था। उसकी कोई ज्यादा उम्र तो नहीं थी पर उसमें

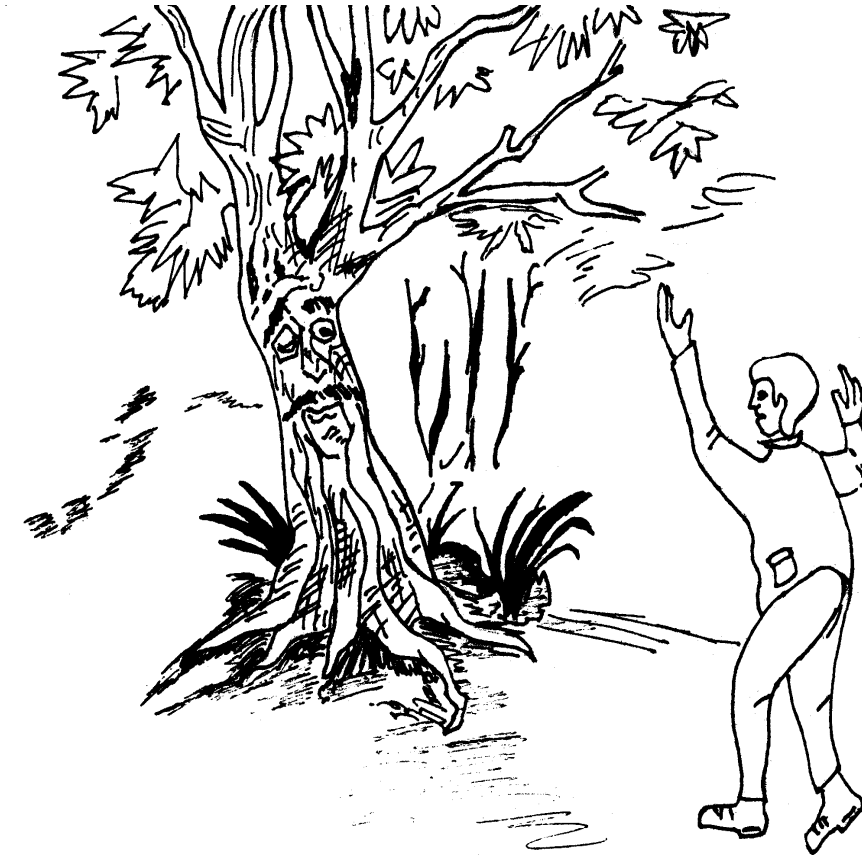

मीठे–मीठे आम लदे हुए थे। छोटू की नजर उस आम के पेड़ पर पड़ी तो उसे वह बड़ा अच्छा लगा। वह उस पेड़ की ओर चल दिया। पेड़ यह सब देख रहा था लड़के को अपनी ओर आता देख वह घबरा रहा था। छोटू ने पेड़ के पास पहुंचकर कहा कि मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ, क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे। पेड़ ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने सोचा कि यदि वह उससे दोस्ती कर लेगा तो लड़का वहीं रूक जाएगा और कभी जरूरत के समय उसे काट लेगा। छोटू पेड़ के जबाव की चिंता किए बगैर ही पेड़ पर छोटा सा लकड़ी और घास से घर बनाकर रहने लगा। दिन बीतते गए, दोनों में बातचीत भी होने लगी थी लेकिन पेड़ को हमेशा छोटू से डर लगा रहता था। एक दिन एक लकड़हारा लकड़ी काटते हुए वहां आया। पेड़ यह देखकर डर गया। छोटू यह सब देख रहा था। लकड़हारे की नजर उस आम के पेड़ पर पड़ी तो उसे अपने दोस्त को बचाने के लिए चिंता होने लगी। अचानक उसे एक तरकीब सूझी। वह पेड़ के पीछे जाकर छिप गया। थोड़ी देर बाद लकड़हारा उस पेड़ को काटने के लिए आगे आया तो एक डराबनी सी आबाज आई.....। 'मेरे पेड़ को हाथ मत लगाना वर्ना बापस नहीं जा पाओगे।' यह सुनकर लकड़हारा डर गया। उसने सोचा कि पेड़ पर कोई जिन्न रहता है। वह अपनी कुल्हाड़ी छोड़कर सिर पर पैर रखकर भागा। इस तरह आम के पेड़ की जान बच गई। पेड़ ने छोटू से कहा कि मुझे माफ कर दो मै तुम्हारे बारे में न जाने क्या–क्या सोचता रहा। लेकिन तुमने फिर भी मेरी जान बचाई। लड़के ने कहा कि मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है सिर्फ तुम ही मेरे दोस्त हो। पेड़ ने भी कहा कि जब वह छोटा था। उसकी मम्मी पास में ही लगी हुई थी। उस समय भी एक लकड़हाने ने मेरी मम्मी को जिंदा ही काट डाला। मैं उस समय बहुत छोटा था इसलिए बच गया था। उस दिन से मुझे मनुष्यों से बहुत डर लगता था। उस समय पास में इमली चाची भी लगी थी। वे कहती थी की मनुष्य बड़े खराब होते हैं। हम उनको खाने के लिए फल और जलाने के लिए सूखी लकड़ियां

देते हैं। वे तो यहां तक भी कह रही थीं कि हम पेड़ लोग जो हवा छोड़ते हैं उसी की बदौलत मनुष्य लोग जिंदा रहते हैं फिर भी वे मौका मिलते ही वे हमें काट ड़ालते हैं। छोटू ने कहा कि दोस्त तुम ठीक कहते हो। मनुष्य जब मनुष्यों को ही नहीं छोड़ता तो पेड़ों का क्या। मैं उन लोगों की ओर से तुमसे माफी मांगता हूँ। फिर वे दोनों हमेशा के लिए पक्के दोस्त बन गए।

कहानी–यूनुस, कक्षा पांचवी, चित्र–अजय विश्वकर्मा, कक्षा दसवीं।

# जामुन काली काली –तुकबंदी

जामुन देखो काली–काली
लगी हुई है डाली–डाली।

हम नीचे से ऊपर जाऐं
डाल पकड़कर उसे हिलाऐं।

जामुन गिरे टप–टप
बच्चे बीनें झटपट।

अब चलते हैं नदी किनारे
दो हैं जामुन खाऐं सारे।

संतोष, कक्षा–पांचवीं, उम्र–13साल
चित्र–अजय विश्वकर्मा, कक्षा–दसवीं

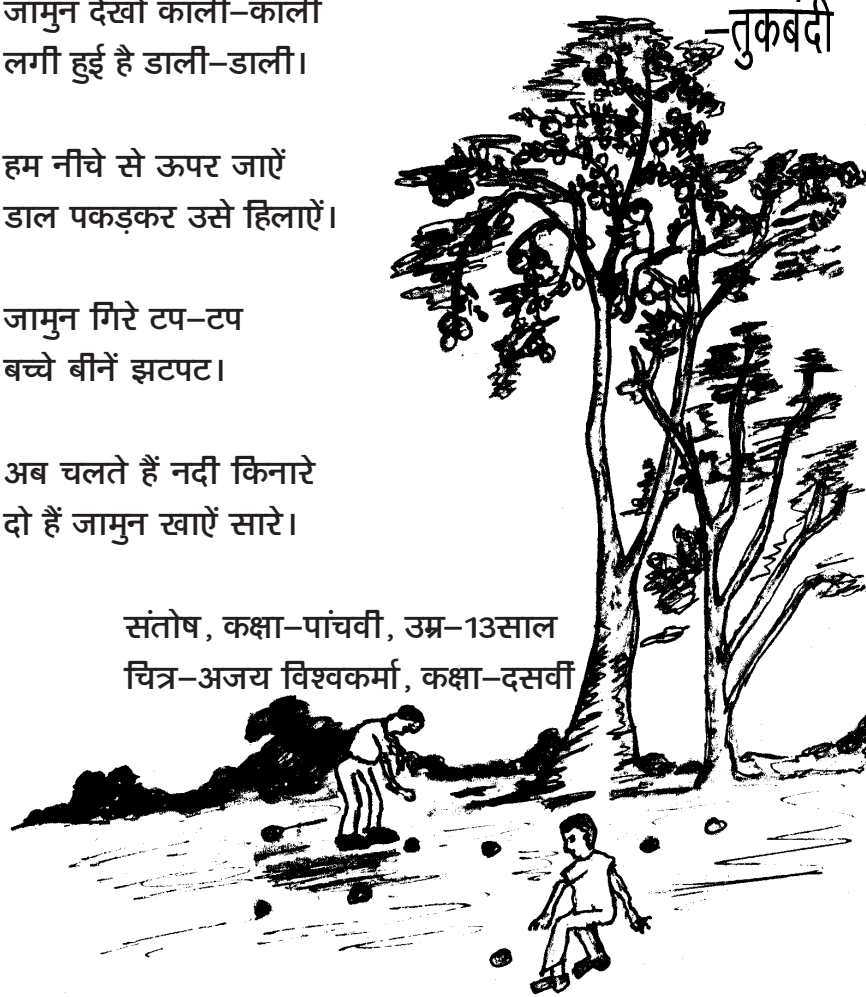

(यह कविता प्लेटफार्म पर आने–जाने वाले एक बच्चे ने एन.एफ.ई. एक्टिविटी के दौरान बनाई। शायद किसी याद की हुई कबिता के टूटे–फूटे अंश भी हो सकते हैं। लेकिन एक्टिविटी के समय बच्चों के साथ उपस्थित जीवोदय की स्टाफ सुश्री मयूरी बड़ोनिया को इस कविता की नीचे की दो लाइने बहुत ही अच्छी लगी। अतः उन्होंने बच्चे को कविता सुधारने में मदद की और हलचल के लिए भेज दी।)

दो संख्याओं का आपस में गुणा करना कई बार पसीना छुड़ा देता है। आइए हम आपको एक ऐसी तरकीब बताते हैं कि आपको गुणा करने के बदले कुछ संख्याओं को जोड़कर ही उसका उत्तर मिल जाएगा।

## गुणा करने का जादू –करके सीखो

इस प्रक्रिया को एक उदाहरण द्वारा समझते हैं। बाद में यदि आपको अन्य किन्हीं संख्याओं को गुणा करना है तो आप इस उदाहरण की तरह ही कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हम दो संख्या 87 और 35 लेते हैं जिसका हमें गुणा करना है। लेकिन पहले नीचे लिखे निर्देशों को ध्यान से समझें।

निर्देश–

1. दो कालम बनाऐं। एक कालम में कोई एक संख्या लिखें दूसरे कालम में दूसरी संख्या लिखें जैसा की आगे तालिका में दिखाया गया है।
2. पहले कालम में लिखी संख्या को नीचे आधा करके लिखते जाऐं।
3. दूसरे कालम में लिखी दूसरी संख्या को भी कालम एक में की गई स्टेप के साथ–साथ दुगना करते जाऐं।
4. यदि कोई बिषम संख्या आती हो जिसे आधा नहीं किया जा सकता तो उसमें से एक कम करने पर जो संख्या आती है उसका आधा करके लिखें।
5. यह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक कि पहले कालम की संख्या को आधा करते–करते अंत में 1 नहीं आ जाता।
6. प्रक्रिया खत्म होने पर पहले कालम में लिखी सभी बिषम संख्याओं पर घेरा बनाऐं।
7. अंत में पहले कालम में घेरे बाली संख्या के सामने दूसरे कालम में लिखी सभी संख्याओं को जोड़ लें। यही आपका उत्तर होगा। यानि प्राप्त संख्या ही उदाहरण में ली गई संख्याओं का गुणनफल होगा।

नोट–

- दोनों संख्याओं में से किस संख्या को पहले कालम में लिखना है यदि इसका निर्णय अच्छा हो तो ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। लेकिन इस सावधानी का जिक्र हम यहां नहीं करेंगे। आप ही खोजकर हमें बताऐं।

**उदाहरणः** 89 और 35 का गुणा कीजिए।

**हल :**

| स्टेप क्र. | पहली संख्या का कालम | दूसरी संख्या का कालम |
|---|---|---|
| 1. | (8 9) | 3 5 |
| 2. | 4 4 | 7 0 |
| 3. | 2 2 | 1 4 0 |
| 4. | (1 1) | 2 8 0 |
| 5. | (0 5) | 5 6 0 |
| 6. | 0 2 | 1 1 2 0 |
| 7. | (0 1) | 2 2 4 0 |

अब पहले कालम की बिषम संख्याओं के सामने दूसरे कालम में जो संख्याऐं लिखी हैं उन सभी संख्याओं को जोड़ते हैं। प्राप्त जोड़ ही उन दोनों संख्याओं का गुणनफल होगा।

```
      3 5
+   2 8 0
+   5 6 0
+ 2 2 4 0
= 3 1 1 5
```

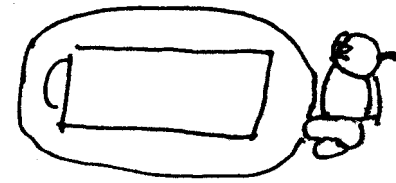

# आप कितने जागरूक

(नोट–इनके जवाव अगले अंक में छापे जाऐंगें। इस कालम का मकसद प्रतियोगिता नहीं वल्कि आपको समसामयिक घटनाओं से जोड़ना है।)

अंतर्राष्ट्रीय–

1. हाल ही में एक नए देश का उदय हुआ जिसका नाम फिलहाल उसका संबिधान नहीं बनने तक दक्षिणी सूड़ान गणतंत्र रखा गया है। यह संयुक्त राष्ट्र संघ का 193 वां सदस्य होगा। इसके साथ ही अब दुनिया में स्वतंत्र देशों की संख्या कितनी हो जाएगी।
2. फरबरी 2011 से लीबिया में सैन्य शासक कर्नल गद्दाफी समर्थकों और बिरोधी बलों के बीच लड़ाई जारी है। संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के बाद से वहां नागरिकों की सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय सैन्य अभियान शुरू किया गया है। यह सैन्य अभियान नाटो द्वारा चलाया जा रहा है। आप बता सकते हैं कि नाटो क्या है?
3. जेके रॉलिंग्स ने हैरी पॉटर किरदार पर आठ उपन्यास लिखी हैं। सात उपन्यास "हैरीपॉटर एंड द फिलॉस्फर्स स्टोन", ~~"हैरीपॉटर एंड सॉर्सरर्स स्टोन",~~ "हैरीपॉटर एंड चेंबर ऑफ सीक्रेट्स", "हैरीपॉटर एंड प्रिजनर ऑफ अजकाबन", "हैरीपॉटर एंड गोबलेट ऑफ फायर", "हैरीपॉटर एंड ऑर्डर ऑफ फोनिक्स", "हैरीपॉटर एंड द ब्लड प्रिंस", हैं ऑठवीं और अंतिम उपन्यास कौन सी है?
4. अमेरिका द्वारा चलाए गए एक खुफिया अभियान में आतंकी ओसामा बिन लादेन का अंत हो गया। उसे जल समाधि दी गई। उस समय ओसामा किस देश में रह रहा था।
5. प्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फ़िदा हुसैन जो अक्सर अपनी चित्रकारी के कारण विवादों से घिरे रहे कुछ दिनों पहले उनका निधन हो गया है। क्या आप बता सकते हैं कि उनका निधन किस देश में हुआ और वे किस तरह की चित्रकारी करते थे।

राष्ट्रीय–

1. योग गुरू बाबा रामदेव ने भ्रष्टाचार और अन्य मामलों को लेकर दिल्ली में अपने समर्थकों के साथ दिल्ली के रामलीला मैदान में अनशन करने की कोशिश की लेकिन सरकार के विरोध के बाद उन्हें बापस लौटकर हरिद्वार में ही अनशन करना पड़ा। क्या आप जानते है कि हरिद्वार किस प्रदेश में है और वहां प्रदेश में किस पार्टी की सरकार उस समय पर थी।
2. पद्मनाभ मंदिर के पांच तहखानों के खोले जाने पर वहां लगभग छह लाख करोड़ की संपत्ति मिलने का अनुमान है। यदि भारत की 150 करोड़ जनसंख्या में इस संपत्ति को बांटा जाए तो प्रत्येक के हिस्से में 4000 रूपये आऐंगे। अभी इसका छटवा तहखाना खुलना शेष है जिसे किसी मान्यता के कारण नहीं खोला जा रहा है। क्या आप जानते हैं कि यह मंदिर किस प्रदेश के किस शहर में स्थित है।
3. अन्ना हजारे सरकार से कौन सा कानून बनाने के लिए बात कर रहे हैं। इस कानून का संबंध भ्रष्टाचार निरोधी व्यवस्था से है। सरकार और अन्ना हजारे की टीम के बीच एक सिविल सोसाइटी के जरिए इस बिल के ड्राफ्ट को लेकर बात चल रही है।
4. ज्योतिर्मय डे, जिनकी 11 जून को गोली मारकर हत्या कर दी गई है। कहा जा रहा है कि उनकी में हत्या अंडरवर्ल्ड के लोगों का हाथ है। श्री डे का संबंध किस पेशे से था।
5. पूर्व पर्यावरण मंत्री श्री जयराम रमेश का विभाग बदलकर अब ग्रामीण विकास कर दिया गया है। पिछले दिनों ये काफी चर्चाओं में रहे। अब राज्य मंत्री से केबिनेट मंत्री हो गए हैं। इनका संबंध किस पार्टी से है। वे लोकसभा और राज्यसभा में से किस सदन के सदस्य हैं।

# एक नजर इधर भी

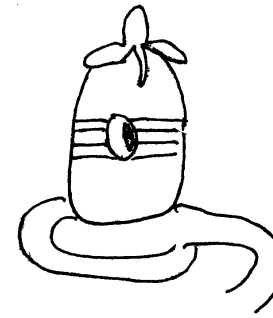

चित्र– शोभा, कक्षा– पांचवी

चित्र– इला, उम्र– 8 साल

चित्र– सूर्या, उम्र– 6 साल

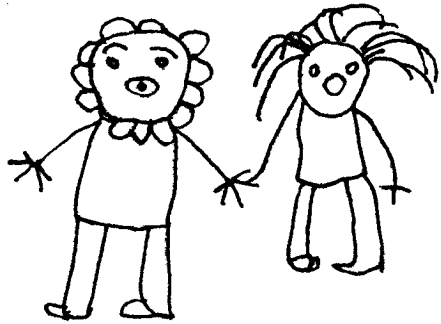

चित्र– सूर्या, उम्र– 6 साल

# जानिये संस्था की तीनों परियोजनाओं के बारे में...

**समयोग**–यह प्रोजेक्ट सीधे प्लेटफार्म पर रहने/घूमने वाले परिवारों व बच्चों से जुड़ा है और उनके लिए काम करता है। प्रोजेक्ट का मुख्य कार्य CWC और SJPU से समन्बध बनाते हुए आउटरीच गतिबिधियों को चलाना और बच्चों को प्लेटफार्म छोड़ने हेतु प्रेरित करना है। यहां संचालित की जाने वाली महत्वपूर्ण गतिबिधियां इस प्रकार हैं–

| | | | |
|---|---|---|---|
| नॉन फार्मल एजुकेशन | व्होकेशनल ट्रेनिंग | 24 घंटे शेल्टर | फेमिली मीटिंग |
| डि–एडिक्शन | बालसभा | टेलिविजन | काउंसलिंग |
| पिकनिक | खेलकूद गतिबिधि | मेडिकल केंप | स्टेकहोल्डर मीटिंग |
| हैल्थ एंड हाइजीन | बालमेला | फेस्टिवल सेलिब्रशन | जांब प्लेसमेंट |

प्रोजेक्ट कोआर्डिनेटर– श्री राहुल बडोनिया, संपर्क–07572241531, 9827985013

**स्पार्क**–यह प्रोजेक्ट लड़कों के लिए एक पुनर्वसन केन्द्र है। यहां उनके आश्रय और आधारभूत जरूरतों की पूर्ति के साथ भविष्य के निर्माण हेतु कई गतिबिधियां चलाई जाती हैं जो इस प्रकार हैं–

| | | | |
|---|---|---|---|
| एजुकेशन | व्होकेशनल ट्रेनिंग | म्यूजिक क्लास | पेरेन्ट्स मीटिंग |
| नैतिक शिक्षा | जनरल नालेज | कराते क्लास | काउंसलिंग |
| चाइल्ड पार्लियामेंट | गार्डनिंग | खेलकूद | क्राफ्ट |
| फेस्टिवल सेलिब्रेशन | ड्राइंग | योगा | डांस क्लास |
| एक्सपोजर बिजिट | पिकनिक | टेलरिंग | कैरियर गाइडेंस |

प्रोजेक्ट कोआर्डिनेटर– श्री दीपक मिस्त्री, संपर्क–07572230490, 8305602275

**चिराग**–इस प्रोजेक्ट के माध्यम से प्लेटफार्म पर रहने या घूमने वाली लड़कियों के लिए पुनर्वसन और आउटरीच सेवाऐं उपलब्ध कराई जाती है। समयोग व स्पार्क प्रोजेक्ट की सभी गतिबिधियां जो लड़कों के लिए चलाई जाती है वे इस प्रोजेक्ट के माध्यम से लड़कियों के लिए भी चलाई जाती है। आउटरीच सेवाओं के लिए समयोग प्रोजेक्ट के ही भवन का उपयोग होता है लेकिन पुनर्वसन के लिए चिराग प्रोजेक्ट के पास अलग से भवन की व्यवस्था है।

प्रोजेक्ट कोआर्डिनेटर–सुश्री पूजा राव, संपर्क–07572236191, 9713814058

(जीवोदय संस्था बाल अधिकारों की एडव्होकेसी हेतु जिला बाल अधिकार मंच होशंगाबाद का समन्वयन करती है जिसमें अभी 26 से अधिक संस्थाऐं और वालेंटियर्स सदस्य हैं। साथ ही जिले में चाइल्ड फ्रेडली माहौल बनाने और बाल संरक्षण हेतु संस्था ने बर्किंग कमेटी का गठन किया है जिसमें 15 शासकीय व अशासकीय संस्थाऐं व वालेंटियर्स सदस्य हैं। दोनों समितियों की बैठक प्रतिमाह नियमित रूप से होती है।)

अगर हमें

मौका मिलता

इंसान बनाने का।

तो कसम से,

वो जोरदार

मॉडल बनाते।

कि भगवान भी

देखकर,

मुंह में

उंगलियां दबाते।

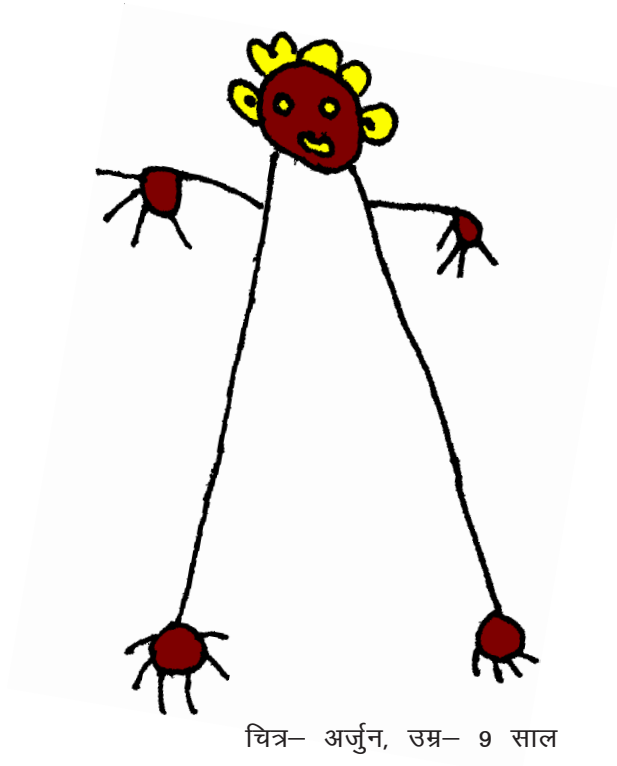

चित्र– अर्जुन, उम्र– 9 साल